नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा के विकास में महात्मा गाँधी का योगदान

डॉ० मुकेश कुमार राय

सहायक प्राध्यापक,राजनीति विज्ञान विभाग,राम कृष्ण द्वारिका कॉलेज, पटना

शोध-सार

गाँधी का नैतिक चिंतन गीता के लोक कल्याण की अवधारणा पर आधारित है। गाँधी के चिंतन के मुख्यत: तीन पक्ष हैं नैतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक। नैतिक एवं सामाजिक चिंतन में गाँधी ने सत्य और अहिंसा नामक सिद्धान्त की स्थापना की जिस पर उपर्युक्त विचार किया जा चुका है। गाँधी का राजनैतिक चिंतन उनके पंचायती राज, स्वराज एवं ट्रस्टीशिप सिद्धान्त पर आधारित है। गाँधी ने रामराज्य को ही स्वराज्य या ग्रामराज्य की संज्ञा दी है। गाँधी का तर्क है कि भारत के प्रत्येक गाँव राजनैतिक, आर्थिक एवं वैधानिक रूप से आत्मनिर्भर होने चाहिए। अर्थात् ये तीनों आवश्यकताएं ग्राम के स्तर पर ही पूरी हो जानी चाहिए। इसके लिए गाँधी ने पंचायती राज का सिद्धान्त प्रस्तुत किया, जिसे आगे चलकर संविधान में अंगीकार किया गया। सभी धर्म मनुष्य को मनुष्य से प्रेम करने, सत्य बोलने एवं ईमानदारी बरतने की शिक्षा देते हैं। मेरी दृष्टि में धर्म आधारित नैतिकता ही वास्तविक नैतिकता है जब कोई आदमी इसका पालन निष्ठा से करता है और विषम परिस्थिति में भी इससे विचलित नहीं होता है। चरित्रवान कहलाता है। हम कह सकते हैं कि नैतिकता एवं चरित्र एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह सर्वमान्य है कि जब तक मनुष्य अपने शरीर एवं मन की आंतरिक शक्तियों का विकास नहीं कर पाता है तब तक समाज से समायोजन नहीं कर पाता है। अत: प्रत्येक समाज शिक्षा द्वारा मनुष्य का चारित्रिक एवं मानसिक विकास करता है।

शब्द कुँजी: आत्मनिर्भर, चरित्र-निर्माण, अहिंसा, आत्मनिर्भरता,चारित्रिक, लोकतंत्र

Received : 21/9/2025 https://doi.org/10.5281/zenodo.18258803 Acceptance : 20/10/2025

परिचय:

स्वयं को सामाजिक व्यवहारों, संस्कृति तथा परम्पराओं तथा परम्पराओं के अनुसार ले चलना। सामाजिक नीति के अनुसार ही आचरण करना नैतिकता है। अत: कहा जा सकता है कि जो शिक्षा सामाजिक नीतियों के अनुसार आचरण करने की शिक्षा दे, वही नैतिक शिक्षा है। नैतिकता समाज द्वारा निश्चित नियमों एवं सिद्धांतों का पालन अलग-अलग समाज में भिन्न-भिन्न होते हैं। इसलिए समाज आधारित नैतिकता भी अलग-अलग होती है। सामाजिक परिवर्त्तन के साथ-साथ इस नैतिकता के स्वरूप में भी परिवर्त्तन होता रहता है। धर्म आधारित नैतिकता में स्थायित्व रहता है। सभी धर्म मनुष्य को मनुष्य से प्रेम करने, सत्य बोलने एवं ईमादारी बरतने की शिक्षा देते हैं। मेरी दृष्टि में धर्म आधारित नैतिकता ही वास्तविक नैतिकता है जब कोई आदमी इसका पालन निष्ठा से करता है और विषम परिस्थिति में भी इससे विचलित नहीं होता है। नैतिकता एवं चरित्र एक ही सिक्के के दो पहलू है। यह सर्वमान्य है कि जब तक मनुष्य अपने शरीर एवं मन की आंतरिक शक्तियों का विकास नहीं कर पाता है तब तक समाज से समायोजन नहीं कर पाता है। अत: प्रत्येक समाज शिक्षा द्वारा मनुष्य का चारित्रिक एवं मानसिक विकास करता है। शिक्षा समाज के हाथ में हो या व्यक्ति के हाथ में या राज्य के हाथ में उसके द्वारा राज्य की शासन प्रणाली का ज्ञान जनता को कराया जाता रहा है। कहीं-कहीं शिक्षा को उसके गुण-दोषों का बखान करने की स्वतंत्रता रही तो कहीं-कहीं उसके गुण-दोषों की विवेचना करने की स्वतंत्रता रहती है। अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का कर्त्तव्य रहा है। संसार के विभिन्न राष्ट्रों में अलग-अलग शासन प्रणाली है और सभी राष्ट्र अपने यहाँ की शासन प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं और अपने नागरिकों को इसके गुणों एवं स्वरूप से परिचित कराते हैं। यह कार्य शिक्षा के द्वारा कराया जाता है। हमारे यहां लोकतंत्र है। हम अपने नागरिकों को लोकतंत्र की शिक्षा देते हैं। अत: नागरिकता की शिक्षा देने का कार्य शिक्षा ही करती है। हमारा समाज परिवर्त्तनशील है और समाज की कुछ आकांक्षाएँ भी होती हैं। इन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए उसे अनेक चुनौतियों से दो चार होना पड़ता है। शिक्षा समाज या राष्ट्र की आकांक्षाओं की पूर्ति करने में सहायता करती है।

नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न विचारकों के विभिन्न मत हैं। प्राय: नैतिकता का सम्बन्ध मनुष्य के अनुभवों से रहता है इसलिए बच्चों को नैतिकता की प्राप्ति अपने तथा बड़े लोगों के अनुभव से होती है। नैतिक बातें उन आचरण पद्धतियों को बोध करती है, जिन्हें मनुष्यों ने शताब्दियों से अन्य मनुष्यों के सहवास में विकसित किए हैं और जिनसे मनुष्यों का कल्याण हुआ है। महात्मा गाँधी के अनुसार-किसी भी कार्य करने में उसे अपना कर्त्तव्य समझकर उसके प्रति सतर्कता जाहिर करना ही नैतिकता है।

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि नैतिक शिक्षा मानव क्रिया-कलापों पर आधारित वह आभ्यंतरिक शिक्षा है जो बालकों में सामाजिक नियमों तथा प्रथाओं के अनुकूल आचरणों को सहेजती हुई उनमें सत्य, न्याय, धर्म, परोपकार, संयम, धैर्य, साहचर्य इत्यादि सद्गुणों व सद्भावनाओं का विकास सामाजिक एवं आत्मिक अनुभव की पृष्ठभूमि में किया करती है। व्यक्ति का सामाजिक और वैयक्तिक विकास नैतिकता पर निर्भर करती है। यह झगड़ा, हड़ताल एवं क्षति को दूर एकता, शांति एवं आनंद का संचार करती है। यही कारण है कि नैतिकता की जितनी आवश्यकता इस वैज्ञानिक युग में है उतनी प्राचीन काल में नहीं थी। निम्न बिन्दुओं के आधार पर आज नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है-

1. मन की शांति के लिए: गाँधी के अनुसार यह एक बड़े वरदान की बात है कि व्यक्ति को एक धार्मिक गुरु मिल जाता है परन्तु मन की शांति खत्म होने पर नैतिकता पर आक्षेप होता होता है। इच्छा, द्वेष, ईर्ष्या, इत्यादि दुर्गुणों से अशांत मन को शांतिमय बनाने के लिए नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है।

2. चरित्र-निर्माण के लिए : महात्मा गाँधी ने ब्रह्मचर्य, सत्य एवं अहिंसा को सहेजते हुए विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण हेतु नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। अत: चरित्र निर्माण के लिए उपदेश के साथ सदाचार का होना भी आवश्यक है जो नैतिक शिक्षा से ही संभव है।

3. बौद्धिक शिक्षा आर्थिक अस्त्र: व्यवस्तता से छुटकारा पाने हेतु : भारत में प्रचलित वर्तमान शिक्षण पद्धति से विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास होता है किन्तु आत्मिक विकास रूक जाता है। वे सौहार्द, प्रेम, दया, परोपकार आदि आत्मिक गुणों से अपरिचित रह जाते हैं। अत: आज नौजवानों के लिए आत्म विकास की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति नैतिक शिक्षा से ही संभव है। बौद्धिक शिक्षा और आर्थिक असमानता के कारण आज नैतिक एवं संवेगात्मक विकास रूक गया है। अत: आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए तथा बौद्धिक शिक्षा को जीवंत बनाए रखने के लिए नैतिक शिक्षा अत्यधिक आवश्यक है।

4. किशोर एवं युवावस्था के लिए: रुसो बालकों को नैतिक शिक्षा देने के विरोधी थे। उनके अनुसार बालकों को निषेधात्मक शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे। रुसों के अनुसार बालकों को इस अवस्था में उन्हें नैतिक, बौद्धिक एवं सामाजिक शिक्षा प्रदान नहीं करनी चाहिए। यद्यपि रुसों ने शैशवावस्था में नैतिक शिक्षा देने से इन्कार किया किन्तु किशोरावस्था में बालकों को नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा प्रदान करना आवश्यक समझा क्योंकि इस अवस्था में बालका के शरीर, मस्तिष्क एवं धनार्जन शक्ति बढ़ जाती है। उनमें सहानुभूति व सद्भावना का प्रादुर्भाव होने लगता है।

5. अनुशासित जीवन के लिए : आज समाज में अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, अराजकता, कर्त्तव्यहीनता, अशिष्टता जैसे अवगुण उत्पन्न हो गये हैं। इन अवगुणों को नैतिक शिक्षा द्वारा ही खात्म किया जा सकता है।

6. राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास के लिए : भारत के कई धर्मों का संगम है जिनकी अलग-अलग मान्यताएँ एवं अन्धविश्वास है। ऐसी स्थिति में अनेकता में एकता की भावना के विकास हेतु नैतिक शिक्षा परमावश्यक है। आज विश्व में शान्ति स्थापना हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना आवश्यक है जो नैतिक शिक्षा से ही संभव है।

नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा के उद्देश्य:

विद्यार्थियों में कर्त्तव्य एवं अधिकार की भावना का विकास करना। विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों के प्रति आस्था जागृत करना। विद्यार्थियों में आत्मसंयम एवं नियमितता का भाव विकसित करना। विद्यार्थियों में आत्म रक्षा एवं परोपकार की भावना का विकास करना।

नैतिक शिक्षा प्रदान करने की विधियाँ:

विद्यालयों में नैतिक शिक्षा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दो प्रकार से दी जा सकती है

प्रत्यक्ष विधियाँ:

शिक्षक द्वारा नैतिक कहानियों, घटनाओं को सुनना। समय तालिका में नैतिक शिक्षा के लिए घण्टे निर्धारित करना। विद्यार्थियों और शिक्षक से नैतिक विषयों पर विचार-विमर्श और विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछना। खेल कार्य

आदि के समय विद्यार्थियों के समक्ष उत्पन्न होने वाली नैतिक समाजिक शिक्षा की समस्याओं के सम्बन्ध में शिक्षक द्वारा उनका पथ प्रदर्शन किया जाए। शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को नैतिक व सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देना। शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को महान और सामाजिक नेताओं की जीवनियाँ और आत्म कथाएँ सुनाना।

अप्रत्यक्ष विधियाँ:

शिक्षण संस्थाओं में कुछ मिनट चिन्तन के बाद कार्य आरम्भ होना चाहिए। विभिन्न शिक्षाविदों का मानना है कि विद्यालय का कार्य आरम्भ होने से पूर्व प्रातः कालीन सभा का आयोजन किया जाना चाहिए। इस सभा में विद्यालय के सभी छात्र सामूहिक रूप से उपासना करें तो उनमें नैतिक मूल्यों व सामाजिक मूल्यों का विकास होता है। विद्यालय के सामुदायिक जीवन को नैतिक शिक्षा देने का महत्वपूर्ण साध न बनाया जा सकता है। शिक्षा और विद्यार्थियों को अपने पारस्परिक सम्बन्ध, नैतिक नियमों का प्रयोग करने और सीखने का सुनहरा अवसर मिलता है। इसके अन्तर्गत पर्यटन, समाज सेवा, कार्य अनुभव इत्यादि कार्यों में विद्यार्थियों को सम्मिलित कर उन्हें नैतिकता सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना चाहिए।

विद्यालय में विद्यार्थियों को सामाजिक वातावरण उत्पन्न करके नैतिक शिक्षा दी जा सकती है। अर्थात् विद्यालय में सभा सोसायटी, दुकान, प्रयोगशालाएँ, खेल इत्यादि की व्यवस्था कर विद्यार्थियों में प्रेम, सहयोग, कर्त्तव्य एवं अधिकार की भावना उत्पन्न करनी चाहिए। इस प्रकार उपर्युक्त प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष विधियों द्वारा विद्यालयों में नैतिक शिक्षा प्रदान की जा सकती है। विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा के द्वारा जनतांत्रिक गुणों का विकास सरलता से किया जा सकता है।

गाँधी के नैतिक मूल्य:

गाँधी अहिंसा को साधन और सत्य को साध्य के रूप में परिभाषित करते हैं। उनकी दृष्टि में अहिंसा और सत्य में कोई भेद नहीं है। किसी को किसी भी प्रकार से क्षति या कष्ट न पहुँचाना ही अहिंसा है। गाँधी ने यहाँ तक कहा कि अकारण किसी पत्ते को तोड़ना भी हिंसा है जबकि किसी महान लक्ष्य के लिए आत्म बलिदान करना अहिंसा है। लेकिन आत्महत्या गाँधी की दृष्टि में जघन्य अपराध है। यह ईश्वर का निषेध है।

गाँधी के नैतिक मूल्य और सिद्धांत:

इस पृथ्वी पर लाखों लोग जन्म लेते हैं, जीते हैं और अन्त में मर जाते हैं। मानवों की इस भीड़ में ही ऐसे होते हैं जो ऐतिहासिक रूप में महान बनते हैं। यह महानता उनके एक विशिष्ट पहचान और विशेष कार्यों को दर्शाती है। हमें अपने जीवन में ऐसे व्यक्तियों का उदाहरण देना चाहिए और उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। महात्मा गाँधी ऐसे ही महानतम उदाहरण के रूप में जो कई लोगों के लिए एक प्रेरणा का नाम है। उनके महान कार्यों से न केवल भारत के ही बल्कि दुनिया भर के लोगों के बीच गाँधीजी एक प्रेरणा का विषय है। उनकी महान विचारधारा और उनके नैतिक मूल्य इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। महात्मा गाँधी हमेशा से ही अपने जीवन में अपने नैतिक मूल्यों और सिद्धान्तों का पालन किया, उनके नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों से आज भी सारी दुनिया के लोग प्रभावित हैं।

नैतिक मूल्यों से जुड़े गांधीवादी सिद्धांत:

गांधी जी ने अपना सारा जीवन बहुत ही सादगी भरा जीवन व्यतीत किया और अपने जीवन के अधिकांश वर्ष लोगों के अधिकारों के लिए लड़ते हुए व्यतीत किया। उनका जीवन प्ररेणा दायक सिद्धांतों और मूल्यों से भरा हुआ था। उन्होंने अपने जीवन में जिन सिद्धांतों को अपनाया, वे उनके अपने जीवन के अनुभवों से प्राप्त हुए थे।

अहिंसा: गाँधी जी के अनुसार, 'अहिंसा' लड़ाई में प्रयुक्त होने वाले हथियारों में एक प्रमुख हथियार है। उन्होंने कहा कि हमें अपने विचारों और कार्यों में अहिंसा को अपनाने की आवश्यकता है। वे अपने जीवन में अहिंसा का सख्ती से पालन करके राष्ट्र की स्वतंत्रता के अभियान में जनता का पूर्ण समर्थन प्राप्त करने में सफल रहे हैं।

सच्चाई : गाँधी जी ईमानदारी के बहुत बड़े अनुयायी थे। उन्होंने बताया कि हमें अपने जीवन में सच्चा होना बहुत जरूरी है। हमें सत्य को स्वीकार करने से कभी डरना नहीं चाहिए। उनके अनुसार, अहिंसा को हम अपने जीवन में ईमानदारी और सच्चाई से ही प्राप्त कर सकते हैं। गांधी जी ने अपना पूरा जीवन लोगों के अधिकारों को दिलाने के लिए लगाया ताकि उन्हें न्याय मिल सके। इस सत्य की लड़ाई के रूप में भी देखा जा सकता है। उन्होंने कहा था कि सत्यता ईश्वर का ही एक दूसरा रूप है।

आत्मनिर्भरता:

महात्मा गाँधी ने हमारी जरूरतों के लिए दूसरों पर

निर्भर रहने के बजाय के आत्मनिर्भर बनाने पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने देश में एक स्वदेशी आंदोलन को चलाया था, जो हमारे देश में निर्मित वस्तुओं के निर्माण और इस्तेमाल और विदेशी निर्माण वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए था। इसका एक उदाहरण हमारे देश में चरखे द्वारा खादी की कताई की शिक्षा थी।

ईश्वर पर भरोसा :

गाँधी जी की ईश्वर में गहरी आस्था थी। उन्होंने कहा था कि कभी भी किसी इंसान से नहीं बल्कि भगवान से डरना चाहिए। वह एक सर्व शक्तिमान है। इस बात की पहचान उनकी इन पंक्तियों में देखा जा सकता है कि ईश्वर, अल्लाह तेरो नाम, सबका सन्मति दो भगवान, जो गाँधी जी के मुख से कही गयी थी।

चोरी न करना :

गाँधी जी ने कहा था कि जो चीजें हमें अपने स्वयं के प्रयास से उपहार के रूप में पुरस्कृत या मिलती हैं, वो चीजें केवल हमारे हक की होती हैं। गलत तरीकों या अन्य अधि कारों के उपयोग से हम जो कुछ भी हासिल करते हैं, वो चीजें हमारी नहीं होती हैं और वो चीजें चोरी की गई चीजों के समान होती है। यह हमारे लिए कभी भी फलदायी नहीं होती है। हमें अपनी कड़ी मेहनत पर विश्वास रखना चाहिए।

महात्मा गाँधी का शिक्षा में योगदान :

महात्मा गाँधी जी प्रचलित शिक्षा-पद्धति से पूर्णतया असन्तुष्ट थे। हमारे देश की वर्त्तमान शिक्षा-योजना को वे अवास्तविक और कृत्रिम मानते थे। उनकी यह धारणा थी कि इसका जीवन की परिस्थितियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं है। विभिन्न विषयों में कोई-सूत्रता नहीं है और न ही इसमें वातावरण के साथ बुद्धिपूर्वक सक्रिय रूप से अनुकूलता प्राप्त करने की कोई शिक्षा व्यवस्था है। इससे बालक अपने देश की संस्कृति से परिचित नहीं होगा। महात्मा गाँधी ने विचार किया कि जब तक देश की राजनैतिक स्वराज्य प्राप्ति नहीं होती, तब तक कि शिक्षा का निर्माण राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होता। अत: उन्होंने देश के समक्ष बेसिक शिक्षा की योजना प्रस्तुत की।

निष्कर्ष:

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि नैतिक शिक्षा मानव क्रिया-कलापों पर आधारित वह आभ्यंतरिक शिक्षा है जो बालकों में सामाजिक शिक्षा के नियमों तथा प्रथाओं के अनुकूल आचरणों को सहेजती हुई उनमें सत्य, न्याय, धर्म, परोपकार, संयम, धैर्य, साहचर्य इत्यादि सद्गुणों व सद्भावनाओं का विकास सामाजिक एवं आत्मिक अनुभव की पृष्ठभूमि में किया करती है। व्यक्ति का सामाजिक और वैयक्तिक विकास नैतिकता शिक्षा पर निर्भर करती है। बौद्धिक शिक्षा और आर्थिक असमानता के कारण आज नैतिक एवं संवेगात्मक विकास रूक सा गया है। अत: आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए तथा बौद्धिक शिक्षा को जीवंत बनाए रखने के लिए नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा अत्यधिक आवश्यक है। नैतिक शिक्षा का अभिन्न अंग माना जाना चाहिए क्योंकि नैतिक शिक्षा के बिना विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। अत: कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा प्रदान करना परम आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. मार्क्स, के एण्ड ऐन्जिलस फेड्रिक, मेनीफस्टो ऑफ कम्यूनिस्ट पार्टी सेलेक्टेड वर्क्स, खण्ड-1, मास्को, फारन लैंग्वेज पब्लिशिंग हाउस, 1951, 63
2. राव, वी० के०, पश्चिमी समाजवाद का गाँधीवादी विकल्प, दिल्ली, साहित्य मंडल प्रकाशन, 1970, 13.
3. प्रिटोरिया जेल : ट्रान्सवाल से द्वितीय पुत्र मणिलाल गाँधी को लिखे गये पत्र का अंश, 25-3-1909 (सम्पूर्ण गांधी वांगमय, खण्ड 9, पृ0 208
4. गाँधी के शैक्षिक विचार यरवदा मन्दिर से लिखे गये 'कुमारी प्रेमा बहिन कंटक के नाम पत्र' का अंश, 5-1-193। नवजीवन,प्र.मं. शिक्षण और संस्कृति, पृ0 62
5. शिक्षण और संस्कृति, पृ0 765-6
6. नवजीवन,23-1-1930, शिक्षण और संस्कृति,पृ0 72
7. सत्याग्रह आश्रम का इतिहास,नवजीवन प्र.म. अहमदाबाद शिक्षण और संस्कृति, पृ0 537-580
8. इंडियन रिसर्च रिव्यू, दिल्ली, नवम्बर 14, वाल्यू 7 अंक-1
9. आइडियल रिसर्च रिव्यू, पटना, मार्च 13, वाल्यू 37 अंक-1, पृ. 59